सत्संग परमसंत पुष्करदयाल जी महाराज
दिनांक 13 सितम्बर 2015,
(दुर्गापुर,)

! राधा–स्वामी.!

गुरू एक नौका लेकर आया है तुम्हे भवसागर से तारने के लिए। भवसागर कोई सागर नही है, भवसागर है भावों का सागर जो हमारे अंदर है। अब तारने वाला नौका ले आया है, अब जो उस नौका में बैठ गया, वो तर गया और जो नही बैठा वो रह गया। जो गुरू के शरणागत हो गया वो नौका में बैठ गया और जो गुरू के शरणागत नही हुआ वो रह गया। शरणागत् क्या होता है? शरणागत् होता है जब आपने गुरू किया तो तन, मन, धन से गुरू की भक्ति करो। जो वो कहे वही करो। हम अपने मन से जो भी करते हैं वो कर्म होता है और करनी वो होती है जो हम वही करते हैं जो गुरू कहता है। क्योंकि सच्चा गुरू हमको सही रास्ता बतायेगा और जो गुरू के समर्पित हो गया, वो समझो तर गया। अभी एक शब्द सुनाया उस शब्द में लिखा था–

'' जो ठगेगा वो ठगा जाएगा, निःसंदेह आप।

इसका मतलब है जब हम किसी को धोखा देते हैं, तो हम उसको धोखा नही देते हैं, हम धोखा अपने आप को देते हैं। अगर हम किसी से पैसा उधार लेते हैं और उसको वापिस नही करते है, साईंस का एक Formula है– Every Action Has Opposit & Equal Reaction, हम जो भी काम करते हैं उसका उल्टा और बराबर हमको मिलता है। यानि की हम किसी को गाली देते हैं, वो गाली उसको नही लगती है, वो गाली वापिस हमारे पास आती है, हमको पता नही चलता लेकिन वो गाली वापिस हमारे पास आती है। इसलिए कभी भी किसी को मन से, वचन से, कर्म से, किसी को तकलीफ मत दे दो। अगर तुम दूसरे को तकलीफ दोगे तो वो तकलीफ वापिस तुम्हारे पास आएगी। अगर आप किसी का बुरा चाहोगे तो उसका बुरा नही होगा, उल्टा हमारा ही बुरा हो जाएगा। तो मनुष्य बनो ! मनुष्य बनने का क्या मतलब है? क्या हम मनुष्य नही हैं? हाँ हम मनुष्य नही हैं, आज का मनुष्य पशुओं से भी गया–गुजरा है। इसलिए मनुष्य बनो ! अब आप मनुष्य कैसे बनोगे? साधारण सी तीन बातें हैं– मन से, वचन से, कर्म से, किसी को तकलीफ मत दो। अगर आप ऐसा करोगे तो आप मनुष्य बन जाओगे। आप एक दिन Try ले लो, आप एक दिन अपने आप से Promise ले लो कि मैं आज किसी का मन से, वचन से , कर्म से, बुरा नही चाहूँगा, और शाम को पूरे दिन का हिसाब ले लो। अगर शाम को आपका जबाब होता है कि हाँ मैने आज किसी का बुरा नही चाहा, किसी का दिल नही दुखाया, तो शाम को आपके मन में शांती आ जाएगी। जब आप रोज अपने साथ ऐसा ही वादा करोगे तो रोज आपके मन में शांती होगी।

अभी इन्होने एक शब्द सुनाया, इसमें कहते हैं कि मैं अपना सिर गुरू के चरणों में झुकाता हूँ, सिर चरणों में झुकाने का मतलब क्या है? आप हजार बार सिर चरणों में रगडते रहो, इससे क्या होगा? इससे कुछ नही होगा। अपने अहंकार को गुरू के चरणों में समर्पित करो, तब तुम्हारा उद्धार होगा। चरणों में सिर झुकाने की तो एक प्रथा बना ली है, चलो जी गुरू जी आये हैं मत्था टेक आते हैं। सिर झुकाने से नही, मन को गुरू को समर्पित करो तब फायदा होगा,

'' है अहंकार का तजना ही फना हो जाना।

अपने अहंकार को गुरू के चरणों में डाल दो। अहंकार क्या होता है? अहंकार होता है, मैं हूँ, मैने किया, तो समझो यह अहंकारी है। क्योंकि कोई करने वाला है ही नही, करने वाला एक मालिक है।

'' सब करनी मैं आप कराऊँ, पहुँचा दू धुर दरबारा।

तुमरी चिंता मैं मन राखी, तू अचिंत रह धरो प्यारा।।

मालिक कहता है– इस संसार में जो कुछ होता है, वो मैं कराता हूँ।

बकरी मैं–मैं करके अपना गला कटावे।

मैना मै–ना कहके बेसन शक्कर खावे।।

जो हमेशा यह कहेगा कि मैंने कुछ नही किया, जो किया मालिक ने किया वो हमेशा सुखी रहेगा।

'' बहना खोल के देखो बैना।

धन सम्पत्ति हाट हवेली इनमें कहाँ सुख चैना।

काल जो आया सब ही छूटे, दिन अब हो गया रैना।।

धन सम्पत्ति में सुख–चैन कहाँ है। अगर धन सम्पत्ति में सुख चैन होता तो अरबपति लोग कभी बीमार नही होते। Ambani Rechest Man of India, उसका जो बडा बेटा है, उसमें ऐसा रोग लग गया है कि वो बहुत मोटा हो गया है और चल नही पाता है, फिर धन–सम्पत्ति में चैन कहाँ है?

कबीर साहब कहते हैं–

दौलत दुनिया माल खजाने, बंधिया बैल चराई।

कोल्हू का जो बैल होता है, उसकी आँखों पर पट्टी बाँध देते हैं और शुबह चलाते हैं कोल्हू में और सारा दिन चलता है और जब शाम को उसकी पट्टी खोलते हैं तो वो देखता है, अरे मैं तो सारे दिन चला और अभी वहीं हूँ, जहाँ से चलना शुरू किया था। हम भी ऐसे ही बंधिया बैल हैं क्योंकि हम धन सम्पत्ति के साथ चिपके रहते हैं। इसलिए हम जन्मते हैं और मरते हैं। हमने आज तक लाख करोड जन्म लिए होंगे और फिर पापड बेल रहें हैं, वही रोग, वही कष्ट, और इस संसार में पिस रहे हैं। धन कमाना जरूरी है, मकान बनाना जरूरी है, लेकिन इस संसार की किसी भी चीज के साथ चिपको मत।

एक आदमी था वो बहुत कंजूस था। उसने अपना सारा धन घडे में रखकर जमीन में दबा दिया। किसी को नही बताया और सारी उम्र उसकी रखवाली करता रहा। एक दिन उसके प्राण छूट गए और उसका जन्म साँप का आ गया और साँप बनकर उसी घडे की रखवाली करने लगा। अब बताओ क्या फायदा हुआ सम्पत्ति का? सारी उम्र धन कमाया और उसके ऊपर बैठ गया साँप बनकर, इसको बोलते हैं मोह। यही हमारा कारण है कोल्हू का बैल, फिर से आओ और फिर से जाओ। हम मोह क्यों करते हैं? ठीक है हमारा बच्चा है, मैं उससे प्यार करता हूँ, उसकी सारी जरूरतें पूरी करता हूँ, उसकी पढाई–लिखाई करता हूँ। लेकिन में उसके मोह में क्यों फँस गया? जब कोई किसी के मोह में फँस जाता है, समझो उसके दुख के दिन शुरू हो गए। इस संसार में हमारे जितने भी रिश्ते हैं, माँ–बाप, भाई–बहन, पति–पत्नि, हमारे घर में बेटा हो गया, मिठाई बाँटो, ये सब फिजूल की बाते हैं, ये हमारे कर्मों के रिश्ते हैं। जो हमारे रिश्तेदार बनकर आते हैं, सब लेन–देन के रिश्ते हैं, इसलिए ना लेन करो और ना देन करो, यदि लिया है तो देने के लिए वापिस आना है और दिया है तो लेने के लिए वापिस आना है। कबीर साहब कहते हैं–

कुछ लेना ना देना, मगन रहना।

अगर तुम्हें इस संसार में बिना मोह के रहना है तो जिससे लिया है उसको दो और जिसको दिया है उससे लो। अगर मैंने आपसे 100रू0 लिए हैं तो मुझे फिर से वापिस आना है 100रू0 देने के लिए। लेना और देना दोनो हथकडियाँ हैं। जिस तरह भैंस खूंटे से सांकर से बंधी होती है उसी तरह हम भी अपने कर्मों से बंधे हैं, हमारे पाँव में भी सांकर बँधी है और जब गुरू जी शब्द की नाव लेकर आयेंगे और आपके पैर बँधे होंगे तो आप कैसे नाव में बैंठेंगे। इसलिए अपने कर्मों की सांकर को तोड दो, तभी आप शब्द की नाव में बैठ पाएँगे। अब इसका मतलब यह नही है कि हमें अपने

कर्मों की बेडियाँ तोडनी है तो हम अपना घर–वार छोडकर जंगलों में चलें जाएँ। नही, अगर जंगलों में जाने पर भी हमारा मन घर में रहा तो क्या फायदा जंगलों में जाने का?

मुझे कपिला जी ने एक फोटो भेजा, वो पहाड पर झरना बह रहा है, वहाँ बैठकर तपस्या कर रहें। मैंने जबाब दिया ठीक है आप हिमालय पर तपस्या कर रहें हैं, अगर वहाँ भी परिवार याद आ गया तो क्या करोगे? इसलिए पहाडों और हिमालय पर जाकर तपस्या करने का कोई फायदा नही है।

चार आश्रम है– ब्रह्मचार्य आश्रम, गृहस्थ आश्रम, वानप्रस्थ आश्रम, बृद्धा आश्रम, इन चारों आश्रमों में गृहस्थ आश्रम सबसे उत्तम आश्रम है। गृहस्थ में रहकर आपको बैराग पाना है, यानि की गृहस्थ में रहकर आपको सब कुछ त्याग करना है। ये नही कि आपको बालक– बच्चों को छोडना है, ये आपके बच्चे हैं, इनको पढाना है, लिखाना है, इनका कैरियर बनाना है, इनकी शादी करनी है, क्यों? क्योंकि आपके घर में बच्चा आया है, वो प्रारब्ध कर्म के हिसाब से आपके साथ लेन–देन पूरा करने आया है और आपको उसके साथ लेन–देन का हिसाब पूरा करना है। अगर आपने ऐसा नही किया तो आप अपने कर्मों से भाग रहे हो और आपने अपने कर्मों की टोकरी को और भारी कर लिया। इसलिए आपके परिवार में जितने बेटे हैं, बेटियाँ हैं उनके साथ आपको अपने कर्म पूरे करने ही है, आप बच नही सकते।

शब्दानंद जी महाराज कहते थे– One Mark Less One Year More, परीक्षा में पास होने के लिए 33 नम्बर चाहिए और अगर गलती से 32 नम्बर आ गए, तो फिर से वही किताबें, फिर से वही Class, फिर से वही Teacher इसी तरह अगर कर्मों की टोकरी में एक कर्म भी रह गया, तो फिर से जन्म, फिर से वही चक्की, फिर से पापड बेलो। इससे अच्छा है क्यों ना हम इसी जन्म में अपने कर्मों को खत्म कर दें। मनुष्य जन्म बहुत दुर्लभ जन्म है और ये जन्म हमको इसलिए मिला है कि हम अपने कर्मों की टोकरी खाली करें और वापिस अपने घर चलें जाएँ। ये संसार हमारा घर नही है, हमारा घर है धुरपद धाम और वहाँ जाने के लिए हमारे पैरों में मोटी–2 रस्सियाँ बँधी हैं। हमें इन रस्सियों को खोलना है। ये जन्म एक Golden Opportuinity है।

वेद व्यास जी ने एक महा–मंण्डल बुलाया और उसमें पूछा– सबसे उत्तम कौन है? किसी ने कुछ जबाब दिया, किसी ने कुछ जबाब दिया, फिर आखिर में वेद व्यास जी ने बताया–

नहिं मानुषात् श्रेष्ठतमं हि किंचित्।

सबसे उत्तम मनुष्य का जन्म है, क्योंकि मनुष्य जन्म में ही मुक्ति है और किसी जन्म में मुक्ति नही है। तो हम क्यों ये जन्म गंवाये।

कबीर साहब कहते हैं–

मेरा हीरा हिराना, कचरे में।

ये जन्म मिला था हमको मिला था, हमने इसे गंवाया। इसलिए इस जन्म को मामूली मत समझो, जो कुछ करना है इसी जन्म में करो, अगला जन्म किसने देखा है? जो कुछ करना है आज करो। हमारा कल जो निकल गया, वो तो निकल गया और जो कल आने वाला है उसका हमें पता नही, आपके हाथ में आज का दिन है और इसका तुम पूरा–2 फायदा उठाओ और अपने जन्म को सुधारो और अपने घर जाने की तैयारी करो।

हमारे आचार्य आनन्द जी बता रहे थे वो पैसे वाला था और हर महीने फिक्स डिपोजिट करवाता था। एक दिन आनन्द जी ने उनसे कहा– ये तो ठीक है जो आप F.D. करवा रहे हैं, लेकिन ये तो संसार के लिए है, क्या आप इस F.D. को वहाँ (मालिक के दरबार) में ले जाओगे? बोला– नही जी, तो ऐसा F.D. बनाओ जो वहाँ Incash हो, ऐसी कमाई करो जो वहाँ काम आए। कैसे बनेगा ये Fix-Deposit, इसका एक ही तरीका है। सतगुरू खोजो रे भाई, जग में दुर्लभ रत्न

यही है। संसार में कोई दुर्लभ रत्न है तो वो है सत्गुरू। वो आपकी ऐसी F.D. बना देगा जो वहाँ Incash होगी।

एक बार गुरू नानक किसी के घर गए, वो पति–पत्नि पैसे वाले थे, गुरू जी ने उस आदमी से कहा– मेरे पास एक सूई है, मैं चाहता हूँ कि ये सूई आप अपने पास रख लो और जब हम वहाँ (धुरपद धाम) में मिलेंगे तो ये सूई आप मुझे वापिस कर देना। वो आदमी बोला– ठीक है गुरू जी, और गुरू जी चले गए। बाद में उसकी पत्नि आई, उसने कहा– गुरू जी ने ये सूई दी है संभालकर रखने को, और कहा है– कि इसे वहाँ वापिस कर देना। पत्नि समझदार थी, उसने कहा– क्या आप वहाँ सूई ले जा सकते हो? पति समझ गया और भागकर गया गुरू जी के पास, बोला– गुरू जी मुझे क्षमा कर दीजिए, मैं आप की बात समझ गया हूँ। इस तरह गुरू जी ने उसको ज्ञान दे दिया कि ये सब वहाँ जाने वाला नही है, वो कमाई कर जो वहाँ काम आएगी। अब आप दान करोगे, पुण्य करोगे, किसी को खाना खिलाओगे, तो क्या इससे मुक्ति मिलेगी? ये सब काल के हथकण्डे हैं, काल हमको कर्म में फँसाकर रखता है। आपने गरीबों को खाना खिलाया, तो आपने कर्म किया ना, तो उसका उल्टा होगा और उसके लिए आपको फिर से जन्म लेना होगा। फिर इससे बचने का उपाय क्या है?

'कुछ लेना ना देना, मगन रहना।

लेना भी कर्म है और देना भी कर्म है, पिंजरा लोहे को हो या पिंजरा सोने का हो पिंजरा तो पिंजरा है। धन–सम्पत्ति हमको बाँधकर रखती है, कोल्हू के बैल की तरह। धन–सम्पत्ति कमाओ, खूब कमाओ, ईमानदारी से कमाओ, लेकिन उसके साथ चिपको मत। उसका सही उपयोग करो, बच्चों को अच्छा पढाओ, अच्छे मकान बनाओ, अच्छी नौकरी पर लगवाओ लेकिन चिपको मत। खूब प्यार दो बीबी–बच्चों को लेकिन मन में ये ख्याल रखो कि ये लेन–देन का हिसाब पूरा करने के लिए आयें हैं। जब इनका लेन–देन पूरा हो गया, उसी टाईम छोडकर चले जाएँगें।

निरंजन लाल का पोता था, खूबसूरत, होनहार, उसका जन्मदिन था। उसने अपने पिताजी से कहा– पिताजी मुझे एक हीरो–होण्डा बाईक दिलवा दो, परिवार का लाडला था, पिताजी ने बाईक दिलवा दी। बेटा बोला– ये बाईक मैं अपने नाना जी को दिखाऊँगा। रास्ते में सडक खाली थी, कुछ नही था, एक पुराना बिजली का खम्बा था। हीरो होण्डा खंबे से टकराई, और लडका खत्म। तो उसके लेन देन में वो हीरो होण्डा रह गई थी, हीरो होण्डा ले ली, लेन देन पूरा हो गया और चला गया। हमारे जितने भी रिश्ते हैं, सब लेन–देन के रिश्ते हैं। अब हम इस संसार में आकर फँस तो गए लेकिन अब क्या करना है? हमें इन रिश्तों को निभाना है, सब काम करो, घर में टी. वी. रखो, फ्रीज रखो, गाडी रखो, लेकिन ये समझो मेरा कुछ भी नही है। जब हम पैदा हुए थे तो हम साथ क्या लेकर आये थे? कुछ नही लेकर आये थे, जो मिला इसी संसार से मिला और मैं साथ क्या लेकर जाऊँगा? कुछ लेकर नही जाऊँगा। जब मैं साथ कुछ लाया नही, साथ कुछ लेकर जाऊँगा नही, तो क्या है मेरा इस संसार में। मेरा सिर्फ अहंकार है। ये मेरा टी. वी. है, ये मेरी कार है, पीछे से ट्रक ने धक्का मारा और कार खत्म हो गई, फिर कहाँ रही मेरी कार, इस संसार में मेरा कुछ भी नही है। एक मुरगावी की तरह जीना सीखो, मुरगावी सारा दिन पानी में तैरती है और जब पानी से बाहर आती है तो एक दम सूखी होती है, उस पर पानी की एक बूँद नही होती। इसी तरह आप भी संसार में रहो, सब काम करो लेकिन ध्यान कहाँ रहे? एक सत्गुरू पर।

कबीर साहब कहते हैं–

रहना नही देश बैगाना है।

ये संसार कागज की पुडिया, बूँद पडे गल जाना है।

कहत कबीर सुनो भाई साधु, सत्गुरू नाम ठिकाना है।।

ये कबीर साहब कहते हैं, ये देश बैगाना है। काठमांण्डु शहर इतना बडा, और सुन्दर शहर था, कितना विश्वास था लेकिन एक भूकंप का झटका आया और सब कुछ तहस–नहस हो गया। मैं टी.वी. देख रहा था, जापान में बहुत भारी बारिश हो रही थी। बडे–बडे मकान पानी में खिलौनो की तरह बह रहे थे। एक सुंदर बंगला भी था जो पानी में बह रहा था, अब जिसका वो बंगला था, उसे कितना विश्वास था उस बंगले पर, मेरा बंगला कितना सुंदर है, इसमें एक बगीचा है, मेरा जीवन भर साथ निभायेगा, लेकिन पानी में बह गया। अब अगर उसने बंगले से मोह किया होगा तो उसे कितना दुख हुआ होगा। अगर उसे जरा भी ज्ञान होता कि ये बंगला मेरा नही है, ये तो मालिक का है, उसी ने दिया था, अब बह गया। उसे जरा भी दुख नही होता। लेकिन अब ये मोह कैसे खत्म होगा? ये मोह खत्म होगा, सत्गुरू खोजो रे भाई, जग में दुर्लभ रत्न यही है। गुरू जी के सत्संग में आओ, उनके वचनों को सुनो, मन में गुनो, तभी तुम्हारा उद्धार होगा।

!राधा–स्वामी!